बेहद का वैराग्य - 07

अव्यक्त बापदादा :- (25.11.1985)

➳ _ ➳ कई बार जब माया का तेज़ वार होता है, अल्पकाल का वैराग भी आता है लेकिन वह हद का अल्पकाल का वैराग होता है। बेहद का सदा का नहीं होता मजबूरी से वैराग वृत्ति उत्पन्न होता है। इसलिए उस समय कह देते हैं कि इससे तो इसको छोड़ दें। मुझे वैराग आ गया है। सेवा भी छोड़ दें यह भी छोड़ दें, वैराग आता है लेकिन वह बेहद का नहीं होता।

➳ _ ➳ विजयी रत्न सदा हार में भी जीत, जीत में भी जीत अनुभव करेंगे। **हद के वैराग को कहते हैं - किनारा करना। नाम वैराग कहते लेकिन होता किनारा है।** तो विजयी रत्न किसी कार्य से, समस्या से, व्यक्ति से किनारा नहीं करेंगे। **लेकिन सब कर्म करते हुए, सामना करते हुए, सहयोगी बनते हुए बेहद के वैरागवृत्ति में होंगे। जो सदाकाल का है।**

➢➢ बेहद का वैराग्य

➳ _ ➳ हद का वैराग्य

→ किसी परिस्थिति या व्यक्ति से जब वैराग आता है तो उसे हद का वैराग्य कहते हैं

■ सेवा छोड़ देते हैं, सब छोड़ देते हैं, उससे किनारा कर लेते हैं

▶ **कोई भी situations life में आये तो भी हमें stable रहना है**

➳ _ ➳ विजयी रत्न किसी कार्य से, समस्या से, व्यक्ति से किनारा नहीं करेंगे

→ लेकिन सब कर्म करते हुए, सामना करते हुए, सहयोगी बनते हुए बेहद के वैरागवृत्ति में होंगे

अव्यक्त बापदादा :- (23.01.1987)

➳ _ ➳ **अपने को राजऋषि, श्रेष्ठ आत्मायें अनुभव करते हो? राजऋषि अर्थात् राज्य होते हुए भी ऋषि अर्थात् सदा बेहद के वैरागी।** स्थूल देश का राज्य नहीं है। लेकिन स्व का राज्य है। स्व-राज्य करते हुए बेहद के वैरागी भी हो, तपस्वी भी हो क्योंकि जानते हो पुरानी दुनिया में है ही क्या। इस दुनिया को कहते ही हो असार संसार, कोई सार नहीं। जितना ही बनाने की कोशिश करते हैं, उतना ही बिगड़ता है। तो असार हुआ ना। तो असार संसार से स्वतः ही वैराग आ जाता है क्योंकि असार संसार से ब्राह्मणों का श्रेष्ठ संसार मिल गया। श्रेष्ठ संसार मिल गया तो असार से वैराग स्वत: हो जायेगा।

➳ _ ➳ **वैराग अर्थात् लगाव न हो। अगर लगाव होता है। तो बुद्धि का झुकाव होता है। जिस तरफ लगाव होगा, बुद्धि उसी तरफ जायेगी।** इसलिए राजऋषि हो, राजे भी हो और साथ-साथ बेहद के वैरागी भी हो। ऋषि तपस्वी होते हैं। **किसी भी आकर्षण में आकर्षित नहीं होने वाले।** स्व-राज्य के आगे यह हद की आकर्षण क्या है? कुछ भी नहीं। तो अपने को क्या समझते हो? राजऋषि। किसी भी प्रकार का लगाव ऋषि बनने नहीं देगा, तपस्वी बन नहीं सकेंगे। **तपस्या में 'लगाव' ही विघ्न-रूप बन कर आता है।** तपस्या भंग हो जाती है। **इसलिए, माया की आकर्षण से सदा परे रहो। कोई भी सम्बन्ध में लगाव न हो।**

➢➢ राजऋषि अर्थात् राज्य होते हुए भी ऋषि अर्थात् सदा बेहद के वैरागी

➽ _ ➽ इस पुरानी दुनिया में कुछ भी नहीं है, ये असार संसार है

→ असार संसार से ब्राह्मणों का श्रेष्ठ संसार मिल गया

■ श्रेष्ठ संसार मिल गया तो असार से वैराग स्वत: हो जायेगा

➽ _ ➽ ऋषि तपस्वी होते हैं वो किसी भी आकर्षण में आकर्षित नहीं होते

→ जो योगी होते हैं वो किसी भी आकर्षण में नहीं आते

→ जो परमात्मा से सब सम्बन्ध जोड़ता है वो राजऋषि होते हैं

■ <u>जब हम पावर, परमात्मा से कनेक्शन जोड़ते हैं तो automatically इस दुनिया से dis-interest हो जाता है</u>

→ किसी भी तरह का अटैचमेंट या लगाव किसी देहधारी से या material तो हमें श्रेष्ठ बनने नहीं देगा, हम तपस्वी बन नहीं सकते

■ <u>तपस्या में 'लगाव' ही विघ्न-रूप बन कर आता है</u>

▶ तपस्या में किसी भी सम्बन्ध में लगाव नहीं होना चाहिए

→ जब हम stable रहेंगे तो जितने हमारे कनेक्शन में आयेंगे वो भी stable रहेंगे

■ <u>हर आत्मा का अपना-अपना पार्ट है</u>

■ हमारा सम्बन्ध बाबा के साथ लवलीन रहे

▶ किसी आत्मा की तरफ हमारा लगाव-झुकाव ना हो

▶ हमें चेकिंग करना है की हमारी बुद्धि कहाँ जाती है

➢➢ वैराग्य शतकम श्लोक no. 31

➽ _ ➽ जब मैं बहुत थोडा सा जानता था तब हाथी के समान मद से अँधा हो रहा था, मैं समझता था की मैं सर्वज्ञ हूँ.. जब मुझे बुद्धिमानी की सोहब्बत से कुछ प्राप्त हुआ तब मैंने समझा की मैं तो कुछ नहीं जानता... मेरा झूठा मद ज्वर की तरह उतर गया..

➽ _ ➽ <u>जो लोग बहुत थोडा ज्ञान रखते हैं वो समझते हैं की हम सब जानते हैं, दुनिया की सारी अकल हम में ही है.. हमारे सिवा और सब पशु हैं..</u> अल्पज्ञता के कारण उन्हें बड़ा घमंड रहता है.. किन्तु जब वे बुद्धिमान और विद्वानों के सोहब्बत में आते हैं, और कुछ सीख जाते हैं, तब वे समझते हैं की हम तो कुछ भी नहीं जानते थे.. हमारा अभिमान मिथ्या था.. उस समय उनका अभिमान हवा हो जाता है..

➽ _ ➽ उस्ताद जोक ने कहा- "हम जानते थे इल्म से कुछ जानेंगे, जाना तो ये जाना की हमने कुछ भी नहीं जाना"

➽ _ ➽ पाश्चात्य विद्वान् ने कहा- "The more we have literate, the more we have learnt, the more we have meditated, the better condition we are to affirm that we are know nothing."

→ अधिक से अधिक पढने, सीखने और विचारने से हमें कहना पड़ता है की हम तो कुछ नहीं जानते

➳ _ ➳ किसी ने ठीक ही कहा की अल्प विद्यो महा गर्वी..

→ **थोड़ी विद्या वाला बहुत घमंडी होता है पर वह विद्वानों की संगत से और सीखकर समझता है तब उसका नशा किरकिरा हो जाता है, उसे फिर मानना पड़ता है की मैं तो एकदम मूर्ख हूँ.. मैं तो अभी कुछ भी नहीं जानता..**